सूविचार

1. पुन्य छप्पर फार कैं दैबै और पाप थप्पड़ मार कैं लैबै।
2. एक-एक ईंट जोरकैं महल बनै, छोटी-छोटी कोसिस ही सफलता की ओर लै जाबै।
3. कभी-कभी छोटी चीजन कौ सबते बड़ौ मतलब हैबै।

बिरज भासा पतरिका

अपनी बिरज, अपनी भासा

जनवरी ते मार्च- 2023

nirmaan
empowering communities

कहावतः-

1. भईया साथ कौ और पईसा हात कौ होनौ चहियै।
अर्थ-भाई का साथ होना और पैसा हाथ में होना चहिये समय का पता नहीं कौनसे समय पर जरुरत पड जाये।
2. जेब कौ पईसा बीत जाबै पर जुबान कौ पईसा ना बीतै।
अर्थ- एक समय पर जेब में से पैसा बीत जायेगा पर आदमी की जुबान का पैसा नहीं बीतेगा।

तईयार करबे बारेः-

जगदीश चन्द नैहचैनिया और सतवीर चौधरी

मदत करबे बारेः-

मुकेश कुमार योगी, रतन लाल योगी और कविता योगी

पहेली

1. रस दे गोरी मसके ते, तेरे मसकन हारे तीन, बकनौ रसिया या ऐ मत जानौ अरे ईख पै धर कैं पहचानौ।

अर्थ- चरखी।

2. दोनूं नार बराबर ठानी इनमें भिल्ले आरम- पार चाख चलौ जब कुआ पै।

अर्थ- चरस।

बिरज भासा में बात:-

तेनाली की कला

विजय नगर कौ एक राजा अपने महल में चित्तर छपवानौ चाहरौ तो बानै एक चित्तरकार नियुक्त कर दियौ। बानैइत्तर बना दिये। जानै भी चित्तर देखे सबनैय भौत बढ़िया लगे लेकिन तेनालीरामै कछु संका लगी। एक चित्तर की पिरस्ठ भूमि में अलग नजारौ। फिर बानै सीधे स्वभाव ते पूछी जाकौ दूसरौ पक्छ कहाँ है। याके अंग कहाँ है। राजा नै हँस कै जबाब दियौ। तू इतनौ भी न जानै इनकी कल्पना करनी चहिए। तो तेनालीराम नै मुँह बुरौ सौ करतौ कहा तो चित्तर ऐसे बनते हैं मैं समझगौ। फिर कछू दिना डटकैं तेनालीराम राजा के ढिंग गयौ और राजा ते कही मैं कई महीना ते चित्तरकला सीख रहूँ आपकी सलाह होतो मैं राज महल की दीवारों पै चित्तर बना दूँ। राजा ने कही ईतो बढ़िया बात है तेनालीराम नै पहले चित्तर नै पै सफेदी पोती और उनकी जगह नय- नये चित्तर बना दिये। एक पाँम कहाँ, एक आँख कहाँ, एक ऊँगली कहीं ऐसे ही बानै पूरी दीवार पै सरीर के सबरे अंग बना दिये। फिर बानै राजा कूँ बुलावे कौ न्यौतो दियो। राजा ऐसे चित्तरनैय देखकैं रिसियागौ। राजा नै कही तस्वीर तौ एक भी नाय। तेनालीराम नै कही चित्तरनमें बाकी चीजों की कल्पना करनी पड़ै। आप नै मेरो सबते बढ़िया चित्तर तो अभी देखो ही नाय। यह बात कहकैं राजा एक खाली दीवार के ढिंग लैगौ बा दीवार पै कछूँ हरी- पीरी लकीरें बनी हुई थीं। तो राजा चिढ़ कैं बोलौ ईतो घास खाती गाय कौ चित्तर है। लिकिन गाय कहाँ है। तेनाली बोलो गाय घास खाकैं अपने बाडे में चली गई। ये कल्पना कर लीजिये हैगौ ना चित्तर पूरौ। राजा बाकी बातें सुनकर समझगौ कि आज तेनालीराम नै उस दिन की बात को जबाब दियौ है।

बिरज भासा में चटोकला:-

एक सहर की छोरी कौ भ्याह गांम में हैगौ। एक दिना वाकी सास नै कही बेटी भैंस कूं न्यार डारया। ऊ भैंस कूं न्यार डारबे गई तौ भैंस के मौंह में झाग आरे तौ ऊ चुपचाप घर आकैं बैठगी। सास नै पूछी बेटी चुपचाप कैसैं बैठीय भैंस कूं न्यार डारयाई का। ना मम्मी भैंस तौ अभी कौलगेट करीय। सास गैरोस हैकैं गिर पडी।

बिरज भासा में भजन:-

टेक- अखियां खोल मईया मांऊ देख, तेरे कट जांय जन्म कलेस

1. या मन्दिर की ऊंची नीची सिढियां ऊपर चढकैं देख तेरे कट जांय जन्म कलेस
अखियां खोल मईया मांऊ देख, तेरे कट जांय जन्म कलेस

2. या मन्दिर में दीपक जरत बिन बाती बिन तेल तेरे कट जायें जन्म कलेस
अखियां खोल मईया मांऊ देख, तेरे कट जांय जन्म कलेस

3. या मन्दिर में नौ दरबाजे यामै भीतर घुसकैं देख तेरे कट जायें जन्म कलेस
अखियां खोल मईया मांऊ देख, तेरे कट जांय जन्म कलेस

बिरज भासा में लोकगीत:-

दिलों को दिलों से मिलायेगी होरी ,
प्यार के रंग खुद मे, सजायेगी होरी
रूठे हुए कौ मनाएंगी होरी!

खुशियों के थाल सजायेगी होरी,
अपनौ के हाल बतायेगी होरी!

सज गई गांम के,बीच में होलिका,
दिये सी अच्छी, नवल बालिका।
सालौं के दिल में, जो जमघट पड़े,
सभी को लौ मे,जलाऐगी होरी!
सारे सिकवे गिले ,भुलायेगी होरी!

रहेगी न अब दूरीयों की खता,
न खोजेंगे कोई अपनों का पता,
धरती नहीं आसमानौ तलक,
परायों के भी मेहमानों तलक!
खुसियों के वादे निभायेगी होरी!

गाते मुस्कुराते, बोलेंगे बोली,
सम्मान से भर,जायेगी झोरी,
होली के रंग मे,भीगेगी चोली!
रूठे हुए को ,मनाएंगी होरी!

निरमान सोसायटी

सहारई रोड़ डीग, भरतपुर,
राजस्थान-321203

www.brajbhasha.org.in

सम्पर्क नम्बर: 8696208682